अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : छठी– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) अनन्तानुबंधी क्रोध का बंध उत्कृष्ट कितने सागरोपम का है-
(क) 40 कोटाकोटि (ख) 70 कोटाकोटि
(ग) 20 कोटाकोटि (घ) 10 कोटाकोटि (क)

(ii) संज्ञी पंचेन्द्रिय में साता वेदनीय का उत्कृष्ट अबाधाकाल होगा-
(क) अन्तर्मुहूर्त्त (ख) एक आवलिका
(ग) 1500 वर्ष (घ) 3000 वर्ष (ग)

(iii) एकेन्द्रिय मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उत्कृष्ट कितना बंध करता है-
(क) 100 सागर (ख) 50 सागर
(ग) 25 सागर (घ) 1 सागर (घ)

(iv) प्रथम गुणस्थान में संज्ञी जीव कम से कम कितनी स्थिति का बंध करता है-
(क) 1 सागर (ख) 1 कोटाकोटि सागर
(ग) अन्तःकोटाकोटि सागर (घ) अन्तर्मुहूर्त्त (ग)

(v) उच्च गोत्र का जघन्य स्थिति बंध कब होता है-
(क) प्रथम गुणस्थान में (ख) छठे-सातवें गुणस्थान में
(ग) दसवें गुणस्थान में (घ) तेरहवें गुणस्थान में (ग)

(vi) छद्मस्थ जीव में गुणस्थान पाये जाते हैं-
(क) 10 (ख) 12
(ग) 13 (घ) 5 (ख)

(vii) सकषायी जीव किससे विशेषाधिक है-
(क) सयोगी से (ख) छद्मस्थ से
(ग) अव्रती से (घ) संसारी जीव से (ग)

(viii) बादर अप्काय के अपर्याप्त में कितनी लेश्याएँ मिलती हैं-
(क) तीन (ख) चार
(ग) छह (घ) एक (ख)

(ix) 64 इन्द्रों का जघन्य विरह है-
(क) अन्तर्मुहूर्त्त (ख) 1 समय
(ग) 6 माह (घ) 15 अहोरात्रि (ख)

(x) पृथ्वीकाय का स्वभाव होता है-
(क) उष्ण (ख) नाना प्रकार का
(ग) कठोर (घ) शीतल (ग)

(xi) वनस्पतिकाय का रंग होता है-
(क) हरा (ख) लाल
(ग) पीला (घ) काला (घ)

(xii) तेउकाय की कुल कोड़ी है-
(क) 7 लाख (ख) 3 लाख
(ग) 28 लाख (घ) 7 लाख (ख)

(xiii) जंगमकाय का गोत्र है-
(क) वायुकाय (ख) त्रसकाय
(ग) अप्काय (घ) तेऊकाय (ख)

(xiv) इस अवसर्पिणी के अंतिम बलदेव तथा भगवान महावीर में कितने वर्षों का अन्तर है-
(क) 21000 (ख) 63000
(ग) 84000 (घ) 42000 (ग)

(xv) सम्मूर्च्छिम मनुष्य का अधिकतम विरह है-
(क) 12 मुहूर्त्त (ख) 24 मुहूर्त्त
(ग) 1 मुहूर्त्त (घ) अन्तर्मुहूर्त्त (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) मनुष्य आयु का उत्कृष्ट स्थिति बंध विशुद्ध परिणामों में होता है। (हाँ)

(ii) दर्शन मोहनीय की तीनों प्रकृति कांक्षा मोहनीय के नाम से जानी जाती है। (हाँ)

(iii) तिर्यंच जीव तिर्यंच आयु को बांधे तो जघन्य अबाधाकाल 1 मुहूर्त्त का होता है। (नहीं)

(iv) अप्रमत्त साधु अहारक शरीर का उत्कृष्ट बंध अन्तःकोटाकोटि सागरोपम करते हैं। (हाँ)

(v) संज्ञी पंचेन्द्रिय के संज्वलन क्रोध का जघन्य बंध 1 महीने का है। (नहीं)

(vi) सिद्ध भगवन्तों से प्रतिपतित सम्यग्दृष्टि अनन्त गुणा है। (नहीं)

(vii) भवसिद्धिया से निगोदिया जीव अनन्त गुणे हैं। (नहीं)

(viii) सभी जीवों में सबसे कम मनुष्यिनी है। (नहीं)

(ix) तेउकाय के जीवों में कभी-कभी विरह पड़ता है। (नहीं)

(x) 15 अहोरात्रि में तो कोई न कोई साधु बनता ही है। (हाँ)

(xi) प्रतिसमय कोई न कोई सिद्ध अवश्य बनता है। (नहीं)

(xii) चारों गति का उत्कृष्ट विरह 24 मुहूर्त्त है। (नहीं)

(xiii) सर्वार्थसिद्ध विमान के देव चारों दिशाओं में तुल्य है। (हाँ)

(xiv) पहली नारकी के नेरीये नारकी जीवों में सर्वाधिक हैं। (हाँ)

(xv) तिर्यंच जीव भी निदान कर सकते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिएः- 15x1=(15)

(i)	थलचर स्त्री	(क) योग 14	योग 13
(ii)	बादर निगोद पर्याप्त	(ख) लेश्या 6	योग 1
(iii)	पंचेन्द्रिय के पर्याप्त	(ग) 4000 वर्ष	योग 14
(iv)	भवनपति देव	(घ)1800 वर्ष	लेश्या 4
(v)	भवसिद्धिया	(च) योग 13	लेश्या 6
(vi)	बादर तेउकाय पर्याप्त	(छ) 1500 वर्ष	लेश्या 3
(vii)	अप्रत्याख्यानी क्रोध	(ज) 63000 वर्ष	4000 वर्ष
(viii)	हास्य	(झ) लेश्या 4	1000 वर्ष
(ix)	स्त्रीवेद	(य) 2000 वर्ष	1500 वर्ष
(x)	तिर्यंच गति	(र) 20 कोड़ाकोडी सागरोपम	2000 वर्ष
(xi)	सूक्ष्म	(ल) 100 अहोरात्रि	1800 वर्ष
(xii)	बलदेव	(व) योग 1	20 कोडाकोडी सागरोपम
(xiii)	सामायिक चारित्र	(क्ष) 12 अहोरात्रि 10 मुहूर्त्त	63000 वर्ष
(xiv)	आठवाँ देवलोक	(त्र) 1000 वर्ष	100 अहोरात्रि
(xv)	चौथा देवलोक	(ज्ञ) लेश्या 3	12 अहोरात्रि 10 मुहूर्त्त

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i) मेरे साम्परायिक और ईर्यापथिक दो भेद हैं। साता वेदनीय

(ii) मेरा उत्कृष्ट स्थिति बंध होने पर ही छह कर्मों का उत्कृष्ट स्थिति बंध होता है। मोहनीय कर्म

(iii) मैं 22 प्रकृतियों का जघन्य स्थिति बंध इनके बंध विच्छेद के समय करता हूँ। सन्नी मनुष्य/क्षपक श्रेणी

(iv) मैं ऐसा जीव हूँ जो आयुबंध हुए बिना भी मरण को प्राप्त कर सकता है। चरम शरीरी

(v) संज्ञी पंचेन्द्रिय मेरी उत्कृष्ट 70 कोटाकोटि सागरोपम की स्थिति बाँधता है। मिथ्यात्व मोहनीय

(vi) 98 बोलों में भवनपति देवों से अगला बोल असंख्यात गुणा मैं हूँ। पहली नरक के नेरइये

(vii) मुझमें विरह द्वार के थोकड़े का अधिकार है। पन्नवणा सूत्र/पन्नवणा सूत्र पद-6

(viii) 98 बोलों में मेरा क्रमाक 97 है। संसारी जीव

(ix) 98 बोलों में मेरा क्रमाक 41 है। ज्योतिषी देवी

(x) मुझे सिद्धों को छोड़कर अन्य जीवों के लिए विरह द्वार के समान ही जानना चाहिए। उद्वर्तन

(xi) मुझमें उत्पन्न होने का उत्कृष्ट विरह पल्योपम का संख्यातवाँ भाग है। सर्वार्थ सिद्ध विमान

(xii) मेरा उत्कृष्ट विरह 7 अहोरात्रि है। सम्यग्दृष्टि/दूसरी नरक

(xiii) मैं अरुणवर नामक द्वीप के अन्तर्गत संख्यात कोटाकोटि योजन लम्बी-चौड़ी झील हूँ। मानसरोवर

(xiv) मैं वह दिशा हूँ, जिसमें कृष्ण पक्षी बहुत उत्पन्न होते हैं। दक्षिण

(xv) मैं जीवों की उत्पत्ति स्थान हूँ। योनि

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2=(16)

(i) एकेन्द्रिय में ज्ञानावरणीय की 5 प्रकृतियों का जघन्य स्थिति बंध लिखिए।

उ. 1 सागर का 3/7 भाग में पल्योपम का असंख्यात भाग कम

(ii) संज्ञी पंचेन्द्रिय के पुरुष वेद का जघन्य तथा उत्कृष्ट बंध लिखिए।
जघन्य-8 वर्ष एवं उत्कृष्ट-10 कोटाकोटि सागरोपम।

(iii) असंज्ञी पंचेन्द्रिय के नरक आयु का जघन्य स्थिति बंध लिखिए।

उ. 10000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक

(iv) शुभ एवं अशुभ विहायोगति का समुच्चय जीव आश्री उत्कृष्ट अबाधाकाल लिखिए।

उ. शुभ विहायोगति का समुच्चय जीव आश्री उत्कृष्ट अबाधाकाल-1000 वर्ष
अशुभ विहायोगति का समुच्चय जीव आश्री उत्कृष्ट अबाधाकाल-2000 वर्ष

(v) बादर अपर्याप्त में जीव के भेद, गुणस्थान, योग एवं उपयोग लिखिए।

उ. बादर अपर्याप्त

जीव के भेद	गुणस्थान	योग	उपयोग
6	3	5	9

(vi) पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में जीव के भेद, गुणस्थान, योग एवं उपयोग लिखिए।

उ. पंचेन्द्रिय अपर्याप्त

जीव के भेद	गुणस्थान	योग	उपयोग
2	3	5	9

(vii) वायुकाय किस दिशा में थोड़ी है और क्यों ?

सबसे थोड़े पूर्व दिशा में है। पूर्व दिशा में पृथ्वी अधिक कठोर है, इसलिए वायुकाय थोड़ी है।

(viii) पृथ्वीकाय एवं अप्काय का संस्थान लिखिए।

उ. पृथ्वीकाय का संस्थान- मसूर की दाल

अपकाय का संस्थान- पानी के बुलबुले

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(i) असंज्ञी पंचेन्द्रिय में छहों संस्थानों का उत्कृष्ट स्थिति बंध लिखिए।

उ. असंज्ञी पंचेन्द्रिय 6 संस्थान का उत्कृष्ट स्थिति बंध- 1000 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35

(ii) एकेन्द्रिय में नपुंसक वेद का जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति बंध एवं अबाधाकाल लिखिए।

उ. जघन्य स्थिति- 1 सागर के 2/7 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम

उत्कृष्ट स्थिति- 1 सागर के 2/7 भाग

अबाधाकाल- अन्तर्मुहूर्त्त

(iii) द्वीन्द्रिय में नीच गोत्र का जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति बंध एवं अबाधाकाल लिखिए।

उ. जघन्य स्थिति- 25 सागर के 2/7 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम

उत्कृष्ट स्थिति- 25 सागर के 2/7 भाग

अबाधाकाल- अन्तर्मुहूर्त्त

(iv) संज्ञी पंचेन्द्रिय में यशकीर्ति का जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति बंध एवं अबाधाकाल लिखिए।

उ. जघन्य स्थिति- 8 मुहूर्त्त । उत्कृष्ट स्थिति- 10 कोटाकोटि सागरोपम। अबाधाकाल- 1000 वर्ष

(v) 98 बोलों में बोल क्रमांक 23,24,25 के नाम लिखिए।

उ. 23. दूसरी नरक के नेरइये असंख्यात गुणा।

24. सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा।

25. दूसरे देवलोक के देव असंख्यात गुणा।

(vi) 98 बोलों में बोल क्रमांक 53,54,55 के नाम लिखिए।

उ. 53. प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय के पर्याप्त असंख्यात गुणा।

54. बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यात गुणा।

55. बादर पृथ्वीकाय के पर्याप्त असंख्यात गुणा।

(vii) मनुष्य किस दिशा में सबसे थोड़े एवं किस दिशा में अधिक हैं ? कारण सहित लिखिए।

उ. मनुष्य सबसे थोड़े दक्षिण और उत्तर दिशा में है। सब क्षेत्रों में भरत और ऐरवत क्षेत्र छोटे हैं, उनमें मनुष्य थोड़े हैं, मनुष्य के वास थोड़े हैं। पूर्व दिशा में पूर्व महाविदेह क्षेत्र बड़ा है। उसमें मनुष्य अधिक हैं, मनुष्य के वास अधिक हैं। पश्चिम दिशा में पश्चिम महाविदेह क्षेत्र है, जिसमें सलिलावती एवं वप्रा विजय है जो एक हजार योजन गहरी (ऊंडी) तिर्छी है। वहाँ मनुष्य बहुत हैं, मनुष्य के वास बहुत हैं।

(viii) वनस्पतिकाय की स्थिति, योनि एवं कुलकोड़ी लिखिए।

उ. वनस्पतिकाय	स्थिति	योनि	कुलकोड़ी
	10,000 वर्ष	24 लाख	28 लाख

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : छठी – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 11 जनवरी, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) 5.5 सागरोपम की स्थिति का मोहनीय कर्म बंधने पर अबाधाकाल होता है-
(क) 4 आवलिका (ख) 2 आवलिका
(ग) 2 आवलिका (घ) 1 आवलिका (घ)

(b) कर्म प्रकृतियों के अबाधाकाल का थोकड़ा किस सूत्र से लिया गया है-
(क) भगवती सूत्र (ख) उत्तराध्ययन सूत्र
(ग) पन्नवणा सूत्र (घ) समवायांग सूत्र (ग)

(c) संज्ञी पंचेन्द्रिय में उच्च गोत्र का उत्कृष्ट अबाधाकाल होगा-
(क) 1000 वर्ष (ख) 2000 वर्ष
(ग) 3000 वर्ष (घ) 4000 वर्ष (क)

(d) समुच्चय जीव की अपेक्षा संज्वलन मान में उत्कृष्ट अबाधाकाल होगा-
(क) 4000 वर्ष (ख) 3000 वर्ष
(ग) 2000 वर्ष (घ) 1000 वर्ष (क)

(e) ऐकेन्द्रिय जीव की अपेक्षा सातावेदनीय की उत्कृष्ट स्थिति होगी-
(क) 25 सागर का 3/14 भाग (ख) 1 सागर का 3/14 भाग
(ग) 50 सागर का 3/14 भाग (घ) 100 सागर का 3/14 भाग (ख)

(f) सकषायी जीव में गुणस्थान पाये जाते हैं-
(क) 12 (ख) 11
(ग) 10 (घ) 13 (ग)

(g) पहले देवलोक में योग पाये जाते हैं-
(क) 9 (ख) 13
(ग) 11 (घ) 12 (ग)

(h) बादर वनस्पतिकाय के अपर्याप्त में कितनी लेश्याएँ पाई जाती हैं-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 1 (घ) 6 (ख)

(i) सातवें देवलोक का उत्कृष्ट विरह है-
(क) 22.5 अहोरात्रि (ख) 45 अहोरात्रि
(ग) 80 अहोरात्रि (घ) 100 अहोरात्रि (ग)

(j) चारों गतियों का उत्कृष्ट विरह कितना बताया गया है-
(क)10 मुहूर्त्त (ख) 12 मुहूर्त्त
(ग) 8 मुहूर्त्त (घ) 14 मुहूर्त्त (ख)

(k) 6 लाख वर्ष का अन्तर किन दो तीर्थंकरों के बीच रहा-
(क) 20वें-21वें (ख)21वें-22वें
(ग) 22वें-23वें (घ) 19वें-20वें (क)

(l) पृथ्वीकाय के जीव किस दिशा में थोड़े हैं-
(क) उत्तर (ख)दक्षिण
(ग) पूर्व (घ) पश्चिम (ख)

(m) दसवें नम्बर की भाव दिशा कौनसी है-
(क) त्रीन्द्रिय (ख) चतुरिन्द्रिय
(ग) तिर्यंच पंचेन्द्रिय (घ) कर्मभूमि (क)

(n) तेऊकाय का वर्ण है-

(क) लाल (ख)पीला

(ग) नीला (घ) सफेद (घ)

(o) भगवती सूत्र के अनुसार एक मुहूर्त्त में साधारण वनस्पति के उत्कृष्ट कितने भव हो सकते हैं-

(क) 32000 (ख)16000

(ग) 65536 (घ) 64000 (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(a) क्षयोपशम सम्यक्दष्टि 66 सागरोपम झाझेरी तक निरन्तर समकित मोहनीय का वेदन कर सकता है। (हाँ)

(b) ईर्यापथिक सातावेदनीय की स्थिति एक समय की है। (नहीं)

(c) समुच्चय जीव की अपेक्षा संज्वलन क्रोध की उत्कृष्ट स्थिति 30 कोटाकोटि सागरोपम की है। (नहीं)

(d) संज्ञी पंचेन्द्रिय की अपेक्षा हास्य का उत्कृष्ट अबाधाकाल 1000 वर्ष है। (हाँ)

(e) असंज्ञी पंचेन्द्रिय स्त्रीवेद की जघन्य स्थिति 1000 सागर के 3/14 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम बांधता है। (हाँ)

(f) प्रज्ञापना सूत्र के 13वें पद में 98 बोल की अल्प बहुत्व का वर्णन नहीं है। (हाँ)

(g) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव मरकर वाणव्यन्तर में देवी भी बन सकता है, किन्तु नपुंसक अवस्था तक उसकी गणना देवी में नहीं की जाती है। (हाँ)

(h) 14वें गुणस्थान में उत्कृष्ट 3 माह का विरह पड़ता है। (नहीं)

(i) खेचर स्त्री में योग 13 होते हैं। (हाँ)

(j) 7 अहोरात्रि में कोई न कोई जीव सम्यग्दृष्टि बनता ही है। (हाँ)

(k) 100 अहोरात्रि सातवें देवलोक का उत्कृष्ट विरह है। (नहीं)

(l) नवग्रैवेयक की अंतिम त्रिक का उत्कृष्ट विरह 1 करोड़ वर्ष के अन्दर है। (हाँ)

(m) मानसरोवर झील के कारण दक्षिण दिशा में अप्काय के जीव अधिक हैं। (नहीं)

(n) ज्योतिषी देवों को देखकर तिर्यंच जीवों को जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न होता है। (हाँ)

(o) सन्नी पंचेन्द्रिय में लगातार 8 भव से अधिक नहीं हो सकते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(a)	नीला वर्ण	(क) 252000 वर्ष	1750 वर्ष
(b)	उच्च गोत्र	(ख) 100 वर्ष	8 मुहूर्त्त
(c)	देवता	(ग) द्रव्य दिशा	6 माह
(d)	33 सागर	(घ) पश्चिम दिशा	6 आवलिका
(e)	मोहनीय कर्म की 26 प्रकृतियाँ	(च) हरा रंग	अभवी जीव
(f)	पंचेन्द्रिय का पर्याप्ता	(छ) 9	गुणस्थान 12
(g)	मध्यम त्रिक के देव में उपयोग	(ज) निगोद	9
(h)	चार बोल	(झ) अशाश्वत	निगोद
(i)	95वाँ बोल	(य) 48 वर्ष	अशाश्वत
(j)	सूर्यग्रहण	(र) 1750 वर्ष	48 वर्ष
(k)	वासुदेव	(ल) 8 मुहूर्त्त	2,52,000 वर्ष
(l)	23वें तीर्थंकर	(व) 6 माह	100 वर्ष
(m)	विमला	(क्ष) आवलिका	द्रव्य दिशा
(n)	वप्रा विजय	(त्र) अभवी जीव	पश्चिम दिशा
(o)	वायुकाय	(ज्ञ) गुणस्थान 12	हरा रंग

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(a) मैं अमुक काल तक किसी कर्म के बंधने के बाद किसी प्रकार का फल नहीं देता हूँ। — अबाधाकाल

(b) मेरी तीनों प्रकृतियाँ कांक्षा मोहनीय के नाम से कही जाती है। — दर्शन मोहनीय

(c) मैं आयुष्य कर्म का बंध किये बिना मरण को प्राप्त होता हूँ। — चरम शरीरी जीव

(d) मेरी 25 प्रकृतियाँ हैं। — चारित्र मोहनीय

(e) मेरी जघन्य स्थिति 12 मुहूर्त्त की है। — साम्परायिक साता वेदनीय

(f) मैं 98 बोलों में से 75वें नम्बर का बोल हूँ। — प्रतिपतित सम्यग्दृष्टि अनंत गुणा

(g) मुझ में अनन्त-अनन्त निगोदिया जीव पाये जाते हैं। — सूक्ष्म तथा साधारण वनस्पतिकाय

(h) मैं मरकर पहली नारकी, भवनपति, वाणव्यन्तर देवों में उत्पन्न हो सकता हूँ। — असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय का पर्याप्त

(i) मैं वह श्रेणि हूँ, जिसमें 6 माह का उत्कृष्ट विरह पड़ सकता है। — क्षपक श्रेणि

(j) मेरा उत्कृष्ट विरह संख्यात वर्षों का है। — 11-12 वाँ देवलोक

(k) मैं वह जीव हूँ, जिसका कोई विरह नहीं होता। — पाँच स्थावर

(l) मेरा पद 6 मास से अधिक खाली नहीं रहता। — 64 इन्द्र

(m) मैं पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में 12 हजार योजन विस्तार का द्वीप हूँ। — गौतम द्वीप

(n) मैं वह दिशा हूँ जिसमें 3,66,00,000 भवनपति देवों के भवन हैं। — उत्तर दिशा

(o) मेरी 28 लाख कुल कोडी है। — वनस्पतिकाय

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(a) निरुपक्रमी मनुष्य में आयुष्य बंध कब बंधता है ?
वर्तमान भव की 1/3 भाग आयु शेष रहने पर।

(b) 5 निद्रा और असातावेदनीय ये 6 प्रकृतियों का उत्कृष्ट अबाधाकाल कितना है ?
तीन हजार वर्ष।

(c) समुच्चय जीव की अपेक्षा 3 विकलेन्द्रिय जाति नाम की जघन्य स्थिति कितनी है ?
पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम एक सागरोपम का पैतीसिया नव भाग यानी 9/35 सागरोपम की।

(d) मनुष्य और तिर्यंच किसी भी आयु का बंध करे तो उत्कृष्ट अबाधाकाल कितना होता है ?
एक करोड़ पूर्व का तीसरा भाग

(e) आठवें देवलोक में जीव के भेद, योग, उपयोग एवं गुणस्थान लिखिए।
जीव के भेद-2, योग-11, उपयोग-9 एवं गुणस्थान-4

(f) बेइन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक में योग, उपयोग, गुणस्थान लिखिए।
योग-3, उपयोग-5, गुणस्थान-2

(g) मनुष्य किस दिशा में थोड़े हैं क्यों ?
सबसे थोड़े दक्षिण और उत्तर दिशा में हैं। सब क्षेत्रों में भरत और ऐरवत क्षेत्र छोटे हैं, उनमें मनुष्य थोड़े हैं, मनुष्य के वास थोड़े हैं।

(h) औदारिक के दस दण्डक लिखिए।
पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, असन्नी-सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और असन्नी-सन्नी मनुष्य।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(a) अबाधाकाल के थोकड़े के आधार पर क्रम संख्या 1 से 20 तक की प्रकृतियों के नाम लिखिए।
5 ज्ञानावरणीय, 4 दर्शनावरणीय, 5 अन्तराय, 5 निद्रा और असाता वेदनीय।

(b) असंज्ञी पंचेन्द्रिय सातावेदनीय कर्म की जघन्य, उत्कृष्ट स्थिति कितनी बांधता है ?
उत्कृष्ट-1000 सागरोपम का 3/14 भाग। जघन्य-1000 सागरोपम का 3/14 भाग में पल्योपम का

असंख्यातवाँ भाग कम।

(c) संज्ञी पंचेन्द्रिय में पाँच वर्ण की अपेक्षा से उत्कृष्ट स्थिति एवं अबाधाकाल लिखिए।

	उत्कृष्ट स्थिति	अबाधकाल
काला	20 कोटाकोटी सागरोपम	2000 वर्ष
नीला	17.5 कोटाकोटी सागरोपम	1750 वर्ष
लाल	15 कोटाकोटी सागरोपम	1500 वर्ष
पीला	12.5 कोटाकोटी सागरोपम	1250 वर्ष
सफेद	10 कोटाकोटी सागरोपम	1000 वर्ष

(d) क्रम संख्या 64 से 102 के अन्तर्गत आने वाली प्रकृतियों में से ऐसी कोई 6 प्रकृतियों के नाम लिखिए जिनका असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय 1000 सागर के 2/7 की स्थिति का उत्कृष्ट बंध करता है।

तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियाँ, जिननाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियाँ, त्रस बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति।

नोट- इनमें से कोई 6 प्रकृतियाँ।

(e) 98 बोलों में से 40 से 45 तक क्रमांक के बोल लिखिए। (केवल नाम लिखिए)

40. ज्योतिष देव संख्यात गुणा।
41. ज्योतिषी देवी संख्यात गुणी।
42. खेचर नपुंसक (गर्भज) संख्यात गुणा
43.थलचर नपुंसक (गर्भज) संख्यात गुणा
44. जलचर नपुंसक (गर्भज) संख्यात गुणा
45. चौरेन्द्रिय के पर्याप्त (गर्भज) संख्यात गुणा

(f) 98 बोलों में से उन बोलों के क्रमांक एवं नाम लिखिए, जिनमें 10 उपयोग पाये जाते हो।

46. पंचेन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक।
94. सकषायी जीव विशेषाधिक।
95. छद्मस्थ जीव विशेषाधिक।

(g) भवनपति देव एवं देवियाँ किस दिशा में थोड़े हैं और किस दिशा में अधिक हैं ?

सबसे थोड़े पूर्व पश्चिम दिशा में हैं। पूर्व पश्चिम दिशा में भवनपति देवों के भवन नहीं हैं। केवल आते जाते हैं। इनकी अपेक्षा उत्तर दिशा में असंख्यात गुणा हैं क्योंकि उत्तर दिशा में 3,66,00,000 भवनपति देवों के भवन हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में असंख्यात गुणा हैं। दक्षिण दिशा में भवनपति देवों के 4,06,00,000 भवन हैं अतः असंख्यातगुणा बतलाये हैं। यहाँ कृष्णपक्षी अधिक उत्पन्न होते हैं।

(h) छह काय के थोकड़े में से त्रसकाय का स्थिति द्वार लिखिए।

बेइन्द्रिय-12 वर्ष, तेइन्द्रिय-49 अहोरात्रि, चौरेन्द्रिय-6 माह, नारकी-देवता जघन्य- 10 हजार, उत्कृष्ट-33 सागर, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य-जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट 3 पल्योपम।

कक्षा : छठी – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2020)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) बेइन्द्रिय मोहनीय कर्म का बंध करता है-
(क) 1 सागर (ख) 25 सागर
(ग) 50 सागर (घ) 100 सागर (ख)

(b) 100 वर्षो मैं मुहूर्त होते हैं-
(क) 30 (ख) 10,800
(ग) 10,80,000 (घ) 9,25,92,592 (ग)

(c) दर्शन मोहनीय की तीनों प्रकृति कांक्षामोहनीय के नाम से ही कही जाती है- इस तथ्य को प्रकट करने वाला सूत्र है-
(क) भगवती (ख) पन्नवणा
(ग) उत्तराध्ययन (घ) बृहत्कल्पभाष्य (क)

(d) 6 मास की आयु शेष रहने पर आयुष्य बान्धते हैं-
(क) युगलिक (ख) मनुष्य
(ग) तिर्यञ्च (घ) अपर्याप्त (क)

(e) संज्ञी पञ्चेन्द्रिय स्त्रीवेद की प्रकृति उत्कृष्ट बांधता है-
(क) 20 कोटाकोटी सागरोपम (ख) 1 सागर के 3/4 भाग
(ग) 15 कोटाकोटी सागरोपम (घ) 25 सागर के 3/14 भाग (ग)

(f) साम्परायिक सातावेदनीय का समुच्चय जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट अबाधाकाल होता है -
(क) 3000 वर्ष (ख) 7000 वर्ष
(ग) 4000 वर्ष (घ) 1500 वर्ष (घ)

(g) संमूर्च्छिम मनुष्य में योग पाते हैं-
(क) 11 (ख) 13
(ग) 3 (घ) 2 (ग)

(h) सूक्ष्म पृथ्वीकाय के पर्याप्त जीव हैं-
(क) संख्यात गुणा (ख) असंख्यात गुणा
(ग) विशेषाधिक (घ) अनन्त गुणा (ग)

(i) दस उपयोग पाते हैं-
(क) पञ्चेन्द्रिय के पर्याप्त में (ख) चतुरिन्द्रिय के पर्याप्त
(ग) बेइन्द्रिय के पर्याप्त में (घ) जलचर नपुंसक में (क)

(j) चार तीर्थ, पाँच महाव्रत, 2 चारित्र का जघन्य विरह होता है-
(क) 84000 वर्ष (ख) 2,52,000 वर्ष
(ग) देशोन 252000 वर्ष (घ) 63000 वर्ष (घ)

(k) बाईसवें तथा तेईसवें तीर्थंकर के बीच में कितने वर्ष का अन्तर रहा-
(क) 6 लाख वर्ष (ख) 5 लाख वर्ष
(ग) 83750 वर्ष (घ) 250 वर्ष (ग)

(l) पूर्व दिशा में अप्काय अधिक हैं क्योंकि-
(क) गौतम द्वीप नहीं है (ख) चन्द्रसूर्य के द्वीप नहीं है
(ग) अरूणवर द्वीप है (घ) मानसरोवर नामक झील है (क)

(m) वायुकाय और व्यन्तर जाति के देवता किस दिशा में सबसे थोड़े हैं-
(क) पश्चिम दिशा में (ख) पूर्व दिशा में
(ग) उत्तर दिशा में (घ) दक्षिण दिशा में (ख)

(n) 1मुहूर्त्त में 65,536 भव एकेन्द्रिय में जघन्य स्थिति के हो सकते हैं' यह वर्णन करने वाला सूत्र है-
(क) आचारांग सूत्र (ख) दशवैकालिक सूत्र
(ग) आवश्यक सूत्र (घ) उत्तराध्ययन सूत्र (घ)

(o) आवश्यक सूत्र की निर्युक्ति के अनुसार असन्नी पञ्चेन्द्रिय के भव हो सकते हैं-
(क) 80 (ख) 60
(ग) 24 (घ) 40 (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) सातावेदनीय (साम्परायिक) की समुच्चय जीव की अपेक्षा से उत्कृष्ट स्थिति 15 कोटाकोटि सागरोपम नहीं होती है। (नहीं)

(b) उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 33 में आयुष्य कर्म की स्थिति नारकी देवता की अपेक्षा उत्कृष्ट 33 सागरोपम की बतलाई है। (हाँ)

(c) नारकी देवता यदि तिर्यञ्चायु मनुष्यायु का बंध करे तो अबाधाकाल 6 माह का होता है। (हाँ)

(d) कर्म बंधने के बाद अमुक समय तक किसी भी प्रकार के फल देने की अवस्था को अबाधाकाल कहते हैं। (नहीं)

(e) समवायांग सूत्र के 25 वें समवाय में विकलेन्द्रिय प्रायोग्य नाम कर्म की 25 उत्तर प्रकृत्तियों का बन्ध बतलाया है। (हाँ)

(f) संज्ञी पञ्चेन्द्रिय के संज्वलन माया की जघन्य स्थिति 1 माह होती है। (नहीं)

(g) रवेचर तिर्यंच पुरूष में चार गुणस्थान तथा पाँच लेश्या होती हैं। (नहीं)

(h) भवनपति देवियों से पहले देवलोक की देवियाँ कम होती हैं। (हाँ)

(i) उपशम श्रेणि तथा क्षपक श्रेणि दोनों ही शाश्वत हैं। (नहीं)

(j) पाँचवें देवलोक का विरह उत्कृष्ट 22.5 अहोरात्रि होता है। (हाँ)

(k) सन्नी (गर्भज) तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में उत्कृष्ट विरह अन्तर्मुहूर्त का होता है। (नहीं)

(l) उत्तर दिशा में भवनपति देवों के 406,00000 भवन हैं। (नहीं)

(m) सबसे उत्कृष्ट पाप करने वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और मनुष्य, सातवीं नरक में उत्पन्न होते हैं। (हाँ)

(n) नारकी की कुल कोडी 25 लाख होती हैं। (हाँ)

(o) आवश्यक सूत्र की निर्युक्ति के अनुसार एक मुहूर्त में चतुरिन्द्रिय के 40 भव होते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	कार्मण त्रिक	(क) 2000 वर्ष	20 कोटाकोटि सागरोपम
(b)	यशः कीर्ति	(ख) 70 कोटाकोटि सागरोपम	10 कोटाकोटि सागरोपम
(c)	जिन नाम	(ग) 7000 वर्ष	अन्तर्मुहर्त
(d)	मिथ्यात्व मोहनीय	(घ) अन्तर्मुहर्त	7000 वर्ष
(e)	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय	(च) 10 कोटाकोटि सागरोपम	70 कोटाकोटि सागरोपम
(f)	नरक गति	(छ) 20 कोटाकोटि सागरोपम	2000 वर्ष
(g)	अशाश्वत	(ज) छः माह	चौबीसवां बोल
(h)	क्षपक श्रेणी	(झ) अनन्त गुणा	छः माह
(i)	सिद्ध	(य) चौबीसवां बोल	अनन्त गुणा
(j)	इक्कीसवें तीर्थंकर	(र) 72 वर्ष	10000 वर्ष
(k)	चौबीसवें तीर्थंकर	(ल) 10000 वर्ष	72 वर्ष
(l)	पश्चिम दिशा	(व) विमान	सलिलावती
(m)	पुष्पावकीर्ण	(क्ष) सलिलावती	विमान
(n)	वनस्पति	(त्र) सात लाख	3200/बोनस अंक दिया जाय
(o)	सम्मति स्थावर	(ज्ञ) 3200	सात लाख

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(a) मैं मिथ्यात्व मोहनीय का 70 कोटाकोटि सागरोपम का बंध करता हूँ। सन्नी पंचेन्द्रिय

(b) मेरी उत्कृष्ट स्थिति विशुद्ध परिणामों में ही बंधती है। तिर्यंचायु/मनुष्यायु/ देवायु

(c) मेरी जघन्य स्थिति 2 माह की है। संज्वलन क्रोध

(d) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 25 सागर का 3/14 भाग है। सातावेदनीय

(e) मेरे अतिरिक्त कोई भी जीव आयुष्य कर्म का बंध किये बिना मरण को प्राप्त नहीं होता है। चरमशरीरी

(f) 66 सागरोपम से कुछ अधिक मेरी उत्कृष्ट स्थिति है। सम्यक्त्व मोहनीय

(g) मुझमें 14 गुणस्थान तथा जीव के 12 भेद पाये जाते हैं। समुच्चय बादर विशेषाधिक

(h) मुझमें 2 योग तथा 4 उपयोग पाये जाते है। चतुरिन्द्रिय के पर्याप्त संख्यात गुणा

(i) मुझमें 4 जीव के भेद तथा 3 योग पाये जाते है। वनस्पतिकाय जीव विशेषाधिक

(j) मेरा उत्कृष्ट विरह 6 माह का है। इन्द्र/ सिद्ध भगवान

(k) भगवान् श्रेयांसनाथ के समय में मेरा जन्म हुआ। अवसपिर्णीकाल के प्रथम वासुदेव

(l) मेरा दूसरा नाम तमा है। नीची दिशा

(m) मुझमें मानसरोवर नामक झील का निवास है। अरुणवर द्वीप

(n) मेरा वर्ण सफेद है। तेउकाय

(o) मेरा नामा प्राजापत्य स्थावर है। वनस्पति काय

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) आयु के सिवाय शेष सात कर्मो के बन्ध के विषय में सामान्य नियम लिखिए।

उ. सात कर्मों में यह सामान्य नियम है कि उत्कृष्ट स्थिति का बंध संक्लिष्ट परिणामों से होता है तथा जघन्य स्थिति का बंध विशुद्ध परिणामों से होता है।

(b) प्रारम्भिक चार वर्ण प्रकृतियों का अबाधाकाल लिखिए।

उ. काला वर्ण का अबाधा काल-2000 वर्ष, नीला वर्ण का अबाधा काल -1750 वर्ष, लाल वर्ण का अबाधा काल-1500 वर्ष, पीला वर्ण का अबाधा काल-1250 वर्ष

(c) समुच्चय अव्रती जीवों में जीव के भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग तथा लेश्या लिखिए।

उ.

भेद	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
14	4	13	9	6

(d) 98 बोलों में अशाश्वत बोल कौन-कौन से हैं ? नाम लिखिए।

उ. 24वां-सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा। 95वाँ-छद्मस्थ जीव विशेषाधिक और 97वाँ- संसारी जीव विशेषाधिक बोल अशाश्वत बोल हैं।

(e) चौथा देवलोक तथा चक्रवर्ती का जघन्य और उत्कृष्ट विरह लिखिए।

उ. चौथा देवलोक का जघन्य- 1 समय, उत्कृष्ट-12 अहोरात्रि 10 मुहूर्त्त।
चक्रवती का देशोन 2,52,000 वर्ष तथा उत्कृष्ट- देशोन 18 कोड़ा कोड़ी सागरोपम।

(f) 64 इन्द्रों के विरह का उल्लेख कहाँ-कहाँ मिलता हैं ?

उ. 64 इन्द्रों के विरह का उल्लेख भगवती सूत्र शतक 8, उद्देशक 8 में तथा जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति द्वीपसमुद्र उद्देशक में मिलता है।

(g) पहली नारकी के नेरिये किस दिशा में थोड़े हैं ? किस दिशा में अधिक हैं ?

उ. पहली नारकी के नेरिये सबसे थोड़े पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा में हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में असंख्यात गुणा हैं।

(h) पृथ्वीकाय तथा वायुकाय के संस्थान और कुल कोड़ी लिखिए।

उ.

	संस्थान	कुल कोड़ी
पृथ्वीकाय	मसूर की दाल	12 लाख
वायुकाय	ध्वजा पताका	7 लाख

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) 50 सागर के 2/7 भाग उत्कृष्ट स्थिति वाली कोई 12 प्रकृतियां लिखिए।

उ. अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक, वेद।

तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की सात प्रकृतियाँ, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति।

(b) त्रसदशक की छ प्रकृतियां (स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशःकीर्ति) उच्चगोत्र और शुभ विहायोगति इन आठ प्रकृतियों का समुच्चय जीव जघन्य उत्कृष्ट कितना बन्ध करता है ?

उ. यश कीर्ति और उच्च गोत्र जघन्य- आठ मुहूर्त्त की और शेष 6 प्रकृतिया जघन्य- पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम 1/7 सागरोपम।

आठों की उत्कृष्ट स्थिति दश कोटाकोटि सागरोपम।

(c) सातावेदनीय समुच्चय जीव की अपेक्षा तथा सातावेदनीय त्रीन्द्रिय की अपेक्षा जघन्य उत्कृष्ट स्थिति तथा अबाधाकाल लिखिए।

उ. सातावेदनीय समुच्चय जीव- जघन्य-12 मुहूर्त्त तथा उत्कृष्ट- 15 कोटाकोटि सागरोपम।

सातावेदनीय त्रीन्द्रिय जीव- जघन्य- 50 सागर का 3/14 भाग में पल्योपम का असंख्यात भाग कम तथा उत्कृष्ट- 50 सागर का 3/14 भाग।

(d) मनुष्य व तिर्यञ्च में सोपक्रमी आयुष्य वालों में अपनी-अपनी आयु का कितना-कितना भाग शेष रहने पर आयुष्य बन्धता है ?

उ. मनुष्य व तिर्यञ्च में सोपक्रमी आयुष्य वालों में अपनी आयु का तीसरा भाग अथवा नवाँ भाग अथवा सत्ताईसवाँ भाग अथवा इक्यासीवां भाग अथवा 243वाँ भाग अथवा 729वाँ भाग शेष रहने पर अथवा अन्तर्मुहूर्त्त आयु शेष रहने पर आयुष्य बांधता है।

(e) पञ्चेन्द्रिय के पर्याप्त से पञ्चेन्द्रिय के अपर्याप्त तक के बोलों में जीव के भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग व लेश्या लिखिए।

उ.	बोल	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
	पंचेन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक	2	12	14	10	6
	बेइन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक	1	1	2	3	3
	तेइन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक	1	1	2	3	3
	पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा	2	3	5	9	6

(f) 98 बोलों में से 73 से 76 तक क्रमांक के बोल लिखिए। (नाम मात्र)

उ. 73. सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त । 74. अभव्य जीव ।

75 प्रतिपतित समदृष्टि । 76. सिद्ध भगवंत ।

(g) 98 बोलों में से 61 से 66 तक के बोल क्रमांक का नाम लिखते हुए मात्र उनका अल्प बहुत्व लिखिए।

61. बादर पृथ्वीकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा।

62. बादर अप्काय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा।

63. बादर वायुकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा।

64. सूक्ष्म तेउकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा।

65. सूक्ष्म पृथ्वीकाय के अपर्याप्त विशेषाधिक।

66. सूक्ष्म अप्काय के अपर्याप्त विशेषाधिक।

(h) विरह की परिभाषा लिखते हुए बारहवें देवलोक का उत्कृष्ट विरह तथा नव ग्रैवेयक की अन्तिम त्रिक का उत्कृष्ट विरह लिखिए।

जितने समय तक उस-उस गति-जाति आदि में एक भी जीव उत्पन्न नहीं हो, उस काल को 'विरह' कहते हैं। अथवा जितने समय तक अभाव रूप अवस्था होती है, उसे विरह कहते हैं।

बारहवें देवलोक का उत्कृष्ट विरह- संख्यात वर्ष अर्थात् 100 वर्ष से कुछ अधिक।

नव ग्रैवेयक की अन्तिम त्रिक का उत्कृष्ट विरह- संख्यात लाख वर्ष अर्थात् 1 करोड़ वर्ष के अन्दर।

कक्षा : छठी – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) एकेन्द्रिय मोहनीय कर्म का बंध करता है-

(क) 1 सागर (ख) 25 सागर

(ग) 50 सागर (घ) 1000 सागर (क)

(b) बिना मन वाला जीव मोहनीय कर्म का उत्कृष्ट बंध करता है-

(क) 70 कोटाकोटी सागर (ख) 1000 सागर

(ग) 100 सागर (घ) 50 सागर (ख)

(c) बादर तेउकाय पर्याप्त में उपयोग होते हैं-

(क) 5 (ख) 4

(ग) 3 (घ) 6 (ग)

(d) सातवीं नरक का उत्कृष्ट विरह होता है-

(क) 6 माह (ख) 12 मुहूर्त्त

(ग) 4 माह (घ) 1 माह (क)

(e) संख्यात माह का विरह होता है-

(क) 12वाँ देवलोक (ख) 4 अनुत्तर विमान

(ग) 10वाँ देवलोक (घ) पहली नरक (ग)

(f) विरह द्वार के समान क्या जानना चाहिए-

(क) अपर्वतन (ख) उद्वर्तन

(ग) उदीरणा (घ) संक्रमण (ख)

(g) उत्कृष्ट कितने मुहूर्त्त तक कोई जीव एक गति से दूसरी गति में उत्पन्न नहीं होता है-

(क) 4 मुहूर्त्त (ख) 8 मुहूर्त्त

(ग) 10 मुहूर्त्त (घ) 12 मुहूर्त्त (घ)

(h) दिसाणुवाइ का थोकड़ा चलता है-

(क) पन्नवणा पद-4 (ख) पन्नवणा पद-3

(ग) पन्नवणा पद-7 (घ) पन्नवणा पद-2 (ख)

(i) जीवों की उत्पत्ति स्थान को कहते हैं-

(क) योनि (ख) उपपात

(ग) मरण (घ) च्यवन (क)

(j) बेइन्द्रिय की स्थिति होती है-

(क) 6 माह (ख) 12 वर्ष

(ग) 49 अहोरात्रि (घ) 16 वर्ष (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) पुरुषवेद की 12 कोटाकोटी सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति होती है। (नहीं)

(b) जघन्य स्थिति बंध क्षपक श्रेणी में ही होता है। (नहीं)

(c) नौवें देवलोक के देवों से सातवीं नरक के नेरइये कम होते हैं। (नहीं)

(d) सभी देवों से देवियाँ अधिक है। (हाँ)

(e) मनुष्य की 12 लाख कुल कोड़ी होती है। (हाँ)

(f) बलदेव का जघन्य विरह 2,53,000 वर्षों का होता है। (नहीं)

(g) तेइन्द्रिय जीव अंतराय कर्म का उत्कृष्ट बंध 50 सागर का 3/7 भाग करता है। (हाँ)

(h) बादर निगोद के पर्याप्ता से बादर तेउकाय के अपर्याप्ता अधिक नहीं है। (नहीं)

(i) पहली नारकी के जीव 7वीं नारकी की अपेक्षा अधिक है। (हाँ)

(j) मानसरोवर झील संख्यात करोड़ योजन लम्बी चौड़ी है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	आतप	(क) 24 मुहूर्त्त	20 कोटाकोटी सागरोपम
(b)	सूक्ष्मत्रिक	(ख) 6 आवलिका	18 कोटाकोटी सागरोपम
(c)	सिद्धों का विरह	(ग) 10 कोटाकोटी सागरोपम	6 माह
(d)	सम्मूर्च्छिम मनुष्य	(घ) 20 कोटाकोटी सागरोपम	24 मुहूर्त्त
(e)	33 सागरोपम	(च) 12 लाख	6 आवलिका
(f)	40 कोटाकोटी सागरोपम	(छ) मच्छ	संज्वलन कषाय
(g)	एक हजार योजन	(ज) 18 कोटाकोटी सागरोपम	मच्छ
(h)	पृथ्वीकाय	(झ) भगवती सूत्र शतक12 उद्देशक 6	12 लाख
(i)	ग्रहण का विरह	(य) संज्वलन कषाय	भगवती सूत्र शतक12 उद्देशक 6
(j)	पुरुषवेद	(र) 6 माह	10 कोटाकोटी सागरोपम

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a)	मेरी स्थिति उत्कृष्ट 70 कोटाकोटि सागरोपम की होती है।	मिथ्यात्व मोहनीय
(b)	मेरी स्थिति 2 समय की है।	ईर्यापथिक सातावेदनीय
(c)	मैं एक ऐसी श्रेणी हूँ, जिसका उत्कृष्ट विरह पृथक्त्व वर्ष का होता है।	उपशम श्रेणि
(d)	मेरा नाम जंगमकाय है।	त्रसकाय
(e)	मैं सूई की नोक जैसे संस्थान वाला हूँ।	शिल्प स्थावर/ तेउकाय
(f)	उत्तर दिशा में मेरे 3,66,00,000 भवन हैं।	भवनपति
(g)	मेरा दूसरा नाम विमला है।	ऊँची दिशा
(h)	मेरी आयु 1000 वर्ष की थी।	22वाँ तीर्थंकर/ अरिष्टनेमिजी
(i)	हमारा विरह नहीं पड़ता है।	5 स्थावर
(j)	मेरा बोल क्रमांक संख्या 51 है।	तेइन्द्रिय के अपर्याप्त

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2=(24)**

(a) कौनसे परिणाम में आयु बंध नहीं होता ?

उ. अति जघन्य परिणामों तथा अति विशुद्ध परिणामों में आयु का बंध नहीं होता है।

(b) 18 कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति वाली प्रकृतियों का नाम लिखिए।

उ. सूक्ष्म त्रिक (सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त), विकलत्रिक (बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय), कुब्जक संस्थान, कीलिका संहनन ये आठ प्रकृतियाँ।

(c) सातावेदनीय का एकेन्द्रिय जघन्य व उत्कृष्ट कितना बंध करता है ?

उ. उत्कृष्ट-एक सागरोपम का 3/14 भाग, जघन्य में- उत्कृष्ट से पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम बंधता है।

(d) ऐसी प्रकृतियों के नाम लिखिए जिनकी जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति एक समान है।

उ. जिननाम तथा आहारक चतुष्क (आहारक शरीर, आहारक अंगोपांग, आहारक बंधन, आहारक संघातन)।

(e) आयुकर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों में एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय तक जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति बन्ध में कितना अन्तर रहता है ?

उ. पल्योपम के असंख्यातवें भाग का।

(f) संज्ञी पंचेन्द्रिय के मिश्र व सम्यक्त्व मोहनीय का उदयकाल कितना है ?

उ. संज्ञी पंचेन्द्रिय के मिश्र मोहनीय का उदयकाल जघन्य-उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त तथा सम्यक्त्व मोहनीय का उदयकाल जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट 66 सागरोपम से कुछ अधिक का है।

(g) नरकायु का असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय कितना बंध करता है ?

उ. नरकायु का असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य 10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक, उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग तथा करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक।

(h) नौवे देवलोक में जीव का भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग, लेश्या लिखिए।

उ. नौवे देवलोक में जीव का भेद- 2, गुणस्थान- 4, योग- 11, उपयोग- 9, लेश्या- 1

(i) 98 बोलों में से 33 एवं 34वें नम्बर का बोल लिखिए।

उ.

बोल	जीव	गुण.	योग	उपयोग	लेश्या
खेचर स्त्री संख्यात गुणी	2	5	13	9	6
थलचर पुरुष संख्यात गुणा	2	5	13	9	6

(j) 98 बोलों में से बोल संख्या 50,60,72 व 73 को लिखिए।

उ.	बोल	जीव	गुण.	योग	उपयोग	लेश्या
	50. चौरेंद्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक	1	2	3	6	3
	60. बादर निगोद के अपर्या. असं. गुणा	1	1	3	3	3
	72. सूक्ष्म निगोद के अपर्या. असं. गुणा	1	1	3	3	3
	73. सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त संख्यात गुणा	1	1	1	3	3

(k) विरह को परिभाषित करते हुए नवीन श्रावक का विरह लिखिए।

उ. जितने समय तक उस-उस गति-जाति आदि में एक भी जीव उत्पन्न नहीं हो, उस काल को 'विरह' कहते हैं। अथवा जितने समय तक अभाव रूप अवस्था होती है, उसे विरह कहते हैं।

नवीन श्रावक का विरह- जघन्य 1 समय, उत्कृष्ट 12 अहोरात्रि।

(l) 98 बोलों में अभवी का कौनसे नम्बर का बोल है ? इनमें गुणस्थान, योग, उपयोग व लेश्या लिखिए।

उ. 74वाँ बोल- गुणस्थान-1, योग-13, उपयोग-6, लेश्या-6

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - 12x3=(36)

(a) अबाधाकाल को परिभाषित करते हुए कर्म-बंध का सामान्य नियम लिखिए।

उ. कर्म बंधने के बाद अमुक समय तक किसी भी प्रकार के फल न देने की अवस्था को अबाधाकाल कहते हैं।

आयु कर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों में यह सामान्य नियम है कि मिथ्यात्व मोहनीय के बंध के आधार से अन्य कर्म व उनकी प्रकृतियों का बंध होता है। मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति का बंध होने पर आयु को छोड़कर शेष सभी कर्मों का भी उत्कृष्ट स्थिति बंध होता है तथा ज्ञानावरणीय आदि छहः कर्मों में से किसी एक की उत्कृष्ट स्थिति बंधने पर मोहनीय कर्म आदि शेष कर्मों की स्थिति उत्कृष्ट बंधने की भजना है।

(b) 10 कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति वाली कोई भी 12 प्रकृतियों के नाम लिखिए।

उ. 1. हास्य, 2. रति, 3. पुरुषवेद, 4-7. चार शुभ स्पर्श (कोमल, लघु, उष्ण, स्निग्ध), 8. सुरभिगंध, 9. वज्र ऋषभ नाराच संहनन, 10. समचतुरस्र संस्थान, 11. श्वेतवर्ण, 12. मीठा रस, 13. स्थिर, 14.शुभ, 15. सुभग, 16. सुस्वर, 17. आदेय, 18. यशकीर्ति, 19. उच्च गोत्र और 20. शुभ विहायोगति। (इनमें से कोई 12 प्रकृतियाँ)

(c) आतप, ज्ञानावरणीय और यशकीर्ति का एकेन्द्रिय जीव जघन्य-उत्कृष्ट कितना बंध करता है ?

उ. एकेन्द्रिय जीव आतप की 1 सागर का 2/7 भाग, ज्ञानावरणीय की 1 सागर का 3/7 भाग, यशकीर्ति की 1 सागर का 1/7 भाग की उत्कृष्ट स्थिति बांधते हैं, जघन्य में अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से

पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम बांधते हैं।

(d) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय नरकगति, नरकायु का जघन्य-उत्कृष्ट कितना बंध करता है ?

उ. नरकगति- 1000 सागर का 2/7 भाग उत्कृष्ट।

जघन्य में पल्योपम का असंख्यात भाग कम बांधता है।

नरकायु- जघन्य 10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक, उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग तथा करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक बांधता है।

(e) 6 संहननों की उत्कृष्ट स्थिति व अबाधाकाल लिखिए।

उ.

	उत्कृष्ट स्थिति	अबाधाकाल
वज्र ऋषभ नाराच	10 हजार वर्ष	1000 वर्ष
ऋषभ नाराच	12 हजार वर्ष	1200 वर्ष
नाराच	14 हजार वर्ष	1400 वर्ष
अर्द्ध नाराच	16 हजार वर्ष	1600 वर्ष
कीलिका	18 हजार वर्ष	1800 वर्ष
सेवार्त्तक	20 हजार वर्ष	2000 वर्ष

(f) ''एक भव में दो आयु का उदय नहीं होता'' इसको आगमिक आधार सहित स्पष्ट कीजिए।

भगवती शतक 5 उद्देशक 3 में एक भव में दो आयु के वेदन का स्पष्ट निषेध किया गया है। भगवती शतक 1 उद्देशक 4 में वेदन दो प्रकार का बतलाया- प्रदेश कर्म का वेदन और अनुभाव कर्म का वेदन। अर्थात् प्रदेशोदय को भी वेदन कहा। अतः एक भव में दो आयु का प्रदेशोदय भी नहीं माना जा सकता।

(g) चार अनुत्तर विमान का विरह स्पष्ट कीजिए।

उ. विरह जघन्य एक समय का तथा उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग होता है। यह उत्कृष्ट विरह काल हजार असंख्यात काल सिद्ध हो जाता है। यह असंख्यात का भेद दूसरा असंख्यात अर्थात् मध्यम परीत्त असंख्यात समझना चाहिए। वह ग्रैवेयक के ऊपरी त्रिक से संख्यात गुणा ही होगा।

(h) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत क्यों नहीं होते ? स्पष्ट कीजिए।

सन्नी (गर्भज) तिर्यच पंचेन्द्रिय में उत्कृष्ट विरह बारह मुहूर्त्त का होता है। उनकी अपर्याप्त अवस्था की स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त ही होती है। अपर्याप्त अवस्था की स्थिति से विरहकाल की स्थिति अधिक होने के कारण सन्नी तिर्यच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत नहीं हो सकते।

(i) 98 बोलों में से 93 से 96 तक के बोल क्रमांक लिखिए।

उ. 93. अव्रती जीव, 94. सकषायी जीव, 95. छद्मस्थ जीव, 96, सयोगी जीव।

(j) 98 बोलों में से 11 से 16 बोल क्रमांक का नाम लिखते हुए मात्र उनका अल्पबहुत्व लिखिए।

11. नौवें देवलोक के देव संख्यात गुणा। 12. सातवीं नरक के नेरइये असंख्यात गुणा।

13. छठी नरक के नेरइये असंख्यात गुणा। 14. आठवें देवलोक के देव असंख्यात गुणा

15. सातवें देवलोक के देव असंख्यात गुणा। 16. पाँचवी नरक के नेरइये असंख्यात गुणा।

(k) बादर निगोद पर्याप्त से बादर तेउकाय अपर्याप्त तक के बोलों में जीव का भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग व लेश्या लिखिए।

उ.	बोल	जीव	गुण.	योग	उपयोग	लेश्या
	बादर निगोद के पर्या. असं. गुणा	1	1	1	3	3
	बादर पृथ्वीकाय के पर्या. असं. गुणा	1	1	1	3	3
	बादर अप्काय के पर्या. असं. गुणा	1	1	1	3	3
	बादर वायुकाय के पर्या. असं. गुणा	1	1	4	3	3
	बादर तेउकाय के अपर्याप्त असं. गुणा	1	1	3	3	3

(l) भाव दिशा के 18 भेद लिखिए।

उ. 1. पृथ्वीकाय, 2. अप्काय, 3. तेउकाय 4. वायुकाय, 5. अग्रबीज, 6. मूलबीज,7. पर्वबीज, 8. स्कंधबीज, 9. द्वीन्द्रिय, 10. त्रीन्द्रिय, 11. चतुरिन्द्रिय, 12. तिर्यच पंचेन्द्रिय, 13. कर्मभूमि, 14. अकर्मभूमि, 15. अन्तरद्वीप, 16. सम्मूर्च्छिम मनुष्य, 17. नारकी और 18. देवता।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा :छठीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	16	18	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

कक्षा :छठीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का अधिकतम बंध है-

(क) 70 सागर (ख) 1000 सागर

(ग) 100 सागर (घ) इनमें से कोई नहीं (घ)

(b) निम्न प्रकृति की उत्कृष्ट स्थिति विशुद्ध परिणामों में बंधती है-

(क) तिर्यंचायु (ख) मनुष्यायु

(ग) देवायु (घ) तीनों ही (घ)

(c) 20 कोटाकोटि सागर का बन्ध होने पर अबाधाकाल होगा -

(क) 2000 महिना (ख) 2000 वर्ष

(ग) 2000 सागर (घ) कोई नहीं (ख)

(d) आयु का बंध निम्न परिणामों में होता है-

(क) जघन्य (ख) उत्कृष्ट

(ग) मध्यम (घ) कोई नहीं (ग)

(e) आयु बंध करने में काल लगता है-

(क) 1 मुहूर्त्त (ख) एक प्रहर

(ग) अन्तर्मुहूर्त्त (घ) कोई नहीं (ग)

(f) प्रथम गुणस्थानवर्ती सन्नी जीव कम से कम बंध करता है-

(क) 1 सागर (ख) 25 सागर

(ग) 50 सागर (घ) अन्तःकोटाकोटि सागर (घ)

(g) कांक्षा मोहनीय कर्म है-

(क) मिथ्यात्व मोहनीय (ख) समकित मोहनीय

(ग) मिश्र मोहनीय (घ) उर्पयुक्त सभी (घ)

(h) 98 बोल की अल्पबहुत्व तभी संभव है, जब जीवों की संख्या हो-

(क) जघन्य (ख) मध्यम

(ग) उत्कृष्ट (घ) संख्या पर निर्भर नहीं (ग)

(i) सबसे थोड़े हैं-

(क) नारकी (ख) तिर्यञ्च

(ग) मनुष्य (घ) देवता (ग)

(j) कम से कम विरह सम्भव है-

(क) 1 माह का (ख) 2 माह का

(ग) 1 समय का (घ) अन्तर्मुहूर्त्त का (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) पन्नवणा सूत्र के 23वें पद में विरह द्वार का थोकड़ा है। (नहीं)

(b) पृथ्वीकाय का जघन्य विरह 1 समय है। (नहीं)

(c) चारों गतियों का उत्कृष्ट विरह 24 मुहूर्त्त है। (नहीं)

(d) पूर्व दिशा भाव दिशा है। (नहीं)

(e) पन्नवणा सूत्र के आधार से छः काय का थोकड़ा है। (हाँ)

(f) 'अप्काय' ब्रह्म स्थावर है। (हाँ)

(g) शिल्प स्थावर का स्वभाव कठोर है। (नहीं)

(h) जंगमकाय का वर्ण नाना प्रकार का है। (हाँ)

(i) सभी प्रकृतियों का जघन्य स्थिति बंध विशुद्ध परिणामों में होता है। (नहीं)

(j) ईर्यापथिक सातावेदनीय का बंध सन्नी पंचेन्द्रिय ही करते हैं। (हाँ)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) मैं कर्म बन्ध के पश्चात् फल नहीं देने की अवस्था हूँ। अबाधाकाल

(b) मैं पीला स्थावर हूँ। पृथ्वीकाय

(c) मेरी कुलकोड़ी 3 लाख हैं। शिल्प स्थावर/ तेउकाय

(d) मैं नाना प्रकार के आकार वाला स्थावर हूँ। प्राजापत्य/ वनस्पतिकाय

(e) मुझमें जीव उत्पन्न होते हैं। योनि

(f) 98 बोल की अल्पबहुत्व में मेरा नम्बर 74वाँ है। अभवी जीव

(g) 98 बोल की अल्पबहुत्व में मेरा नम्बर 92वाँ है। मिथ्यादृष्टि

(h) मेरा अधिकतम विरह 15 दिन है। नवीनसाधु/तीसरी नरक

(i) मेरा अधिकतम विरह पल्योपम का संख्यातवाँ भाग है। सर्वार्थसिद्ध विमान

(j) मेरा अधिकतम विरह 100 अहोरात्रि है। 8वाँ देवलोक

प्र.4 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। 8x2=(16)

(a) **पहली नरक में जीव के भेद 3 लिये हैं, क्यों ?**

उ. नारकी में सन्नी पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त-पर्याप्त जीव तो होते ही है तथा असन्नी तिर्यच पंचेन्द्रिय के पर्याप्त जीव भी मरकर पहली नारकी, भवनपति तथा वाणव्यन्तर देवों में जाकर उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसे जीव अपर्याप्त अवस्था में कुछ समय असन्नी रहते हैं, इस अपेक्षा से असन्नी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्त भेद भी माना जाता है।

(b) **98 बोल में से कोई दो अशाश्वत बोल लिखिए।**

उ. 98 बोलों में कुछ बोल अशाश्वत भी हैं, जैसे-24वाँ-विरह की अपेक्षा, 95वाँ-श्रेणि में विरह की अपेक्षा, 97वाँ-14वें गुणस्थान में विरह की अपेक्षा।

(c) **45वें बोल में गुणस्थान, योग, उपयोग व लेश्या लिखिए।**

उ. गुणस्थान 1 योग- 2 उपयोग- 4 लेश्या- 3

(d) **वासुदेव का जघन्य तथा उत्कृष्ट विरह लिखिए।**

जघन्य 2,52,000 वर्ष, उत्कृष्ट- देशोन 20 कोड़ा कोड़ी सागरोपम

(e) **9वें ग्रैवेयक का जघन्य तथा उत्कृष्ट विरह लिखिए।**

उ. 9वें ग्रैवेयक पहली त्रिक (1-3) जघन्य 1 समय उत्कृष्ट संख्यात सैकड़ों वर्षों का

9वें ग्रैवेयक दूसरी त्रिक (4-6) जघन्य 1 समय उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्षों का

9वें ग्रैवेयक दूसरी त्रिक (7-9) जघन्य 1 समय उत्कृष्ट संख्यात लाखों वर्षों का

(f) **सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत नहीं होते हैं ? क्यों ?**

उ. सन्नी (गर्भज) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्कृष्ट विरह बारह मुहूर्त्त का होता है। उनकी अपर्याप्त अवस्था की स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त ही होती है। अपर्याप्त अवस्था की स्थिति से विरहकाल की स्थिति अधिक होने के कारण सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत नहीं हो सकते।

(g) **छह माह का अधिकतम विरह किन-किनका है ?**

उ. 1. 64 इन्द्रों का 2. सिद्ध भगवान का 3. सातवीं नरक का।

(h) **देवता की कुल योनि तथा कोड़ी लिखिए।**

उ. योनि- 4 लाख कोड़ी- 26 लाख।

प्र.5 निम्न जीवों के निम्न कर्मप्रकृति की बन्धने वाली जघन्य तथा उत्कृष्ट स्थिति लिखिए। 6x3=(18)

(a) एकेन्द्रिय - असातावेदनीय

उ. जघन्य-1 सागर का 3/7 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम।

उत्कृष्ट- एक सागर का 3/7 भाग

(b) बेइेन्द्रिय - मनुष्य गति

उ. जघन्य- 25 सागर के 3/14 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम।

उत्कृष्ट- 25 सागर के 3/14 भाग की।

(c) तेइन्द्रिय - सूक्ष्म नामकर्म

उ. जघन्य- 50 सागर के 9/35 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम।

उत्कृष्ट- 50 सागर के 9/35 भाग की।

(d) चउरिन्द्रिय - कालावर्ण नामकर्म

उ. जघन्य- 100 सागर के 8/28 अथवा 20/70 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम।

उत्कृष्ट- 100 सागर के 8/28 अथवा 20/70 भाग की।

(e) संज्ञी पंचेन्द्रिय - संज्वलन लोभ

उ. जघन्य- अन्तर्मुहूर्त्त की

उत्कृष्ट- 40 कोटाकोटी सागरोपम की।

(f) समुच्चय जीव - यशःकीर्ति नामकर्म

उ. जघन्य- 8 मुहूर्त्त की

उत्कृष्ट- 10 कोटाकोटी सागरोपम की।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पक्ति में लिखिए : -(कोई 9) 9x4=(36)

(a) एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक मिथ्यात्व मोहनीय का उत्कृष्ट स्थिति बंध लिखिए।

उ. मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का एकेन्द्रिय 1 सागर का, बेइन्द्रिय 25 सागर का, तेइन्द्रिय 50 सागर का, चौरेन्द्रिय 100 सागर का, असंज्ञी पंचेन्द्रिय 1000 सागर का तथा सन्नी पंचेन्द्रिय 70 कोटाकोटि सागरोपम का उत्कृष्ट बन्ध करते हैं।

(b) असन्नी पंचेन्द्रिय के 6 संस्थान का उत्कृष्ट स्थिति बंध लिखिए।

उ. समचतुरस- 1000 सागर का 5/35

न्यग्रोध परिमण्डल- 1000 सागर का 6/35

सादि- 1000 सागर का 7/35

वामन- 1000 सागर का 8/35

कुब्ज- 1000 सागर का 9/35

हुण्डक- 1000 सागर का 10/35

(c) मनुष्य के चारों आयु का जघन्य तथा उत्कृष्ट स्थिति बंध लिखिए।

उ. नरकायु, देवायु - जघन्य -10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक।

उत्कृष्ट- 33 सागरोपम क्रोड पूर्व का तीसरा भाग अधिक।

तिर्यञ्चायु, मनुष्यायु - जघन्य -अन्तर्मुहूर्त्त।

उत्कृष्ट- तीन पल्योपम करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक।

(d) 98 बोल प्रथम तीन बोलों में योग व उपयोग लिखिए।

उ.

बोल	योग	उपयोग
सबसे थोड़े गर्भज मनुष्य	15	12
इनसे मनुष्यिनी संख्यात गुणी	13	12
बादर तेउकाय पर्याप्त असंख्यात गुणा	1	3

(e) 98 बोल में से बोल 32 से 37 तक के बासठिये को खुलासा लिखिए।

उ.

बोल	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
खेचर तिर्यंच पुरुष असंख्यात गुणा	2	5	13	9	6
खेचर स्त्री संख्यात गुणी	2	5	13	9	6
थलचर पुरुष संख्यात गुणा	2	5	13	9	6
थलचर स्त्री संख्यात गुणी	2	5	13	9	6
जलचर पुरुष संख्यात गुणा	2	5	13	9	6
जलचर स्त्री संख्यात गुणी	2	5	13	9	6

(f) 98 बोल में बोल 53 से 58 तक के बासठिये को खुलासा लिखिए।

उ.

बोल	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय के पर्याप्त असंख्यात गुणा	1	1	1	3	3
बादर निगोद के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
बादर पृथ्वीकाय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
बादर अप्काय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
बादर वायुकाय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
बादर तेउकाय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3

(g) **98 बोल में 3 उपयोग वाले कोई छह बोल लिखिए।**

उ. नोटः- 98 बोल के बासठिये में 3 उपयोग मिलने वाले कोई भी बोल पेज-50-51-52 से देखें।

(h) **98 बोल में 4 लेश्या वाले कोई छह बोल लिखिए।**

उ. नोटः- 98 बोल में 4 लेश्या वाले बोल पेज- 49-50-51-52 पर देखें।

(i) **तिर्यंच पंचेन्द्रिय किस दिशा में न्यूनाधिक है ? कारण सहित लिखिए।**

उ. सबसे थोड़े पश्चिम दिशा में है। कारण यह है कि पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन का गौतम द्वीप है। इसलिये पश्चिम दिशा में अप्काय के जीव थोड़े हैं और इस कारण तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के जीव थोड़े हैं। पूर्व दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। पूर्व दिशा में गौतम द्वीप नहीं है, इस कारण अप्काय अधिक है और इसलिए तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के जीव विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में चंद्र सूर्य के द्वीप नहीं हैं, इसलिये अप्काय अधिक है और इसीलिये तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के जीव विशेषाधिक हैं। उत्तर दिशा में इनकी अपेक्षा विशेषाधिक हैं। कारण यह है कि उत्तर दिशा में संख्यात द्वीप समुद्र आगे जाने पर अरुणवर नामक द्वीप आता है। इस द्वीप में मानसरोवर नामक झील है जो संख्यात कोटाकोटि (कोड़ाकोड़ी) योजन लम्बी चौड़ी है। इस सरोवर के कारण उत्तर दिशा में अप्काय अधिक है और इसलिये तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के जीव विशेषाधिक हैं।

(j) **मनुष्य किस दिशा में न्यूनाधिक है ? कारण सहित लिखिए।**

उ. सबसे थोड़े दक्षिण और उत्तर दिशा में हैं। सब क्षेत्रों में भरत और ऐरवत क्षेत्र छोटे हैं उनमें मनुष्य थोड़े हैं, मनुष्य के वास थोड़े हैं, बादर तेउकाय थोड़ी है और वहाँ से थोड़े जीव सिद्ध होते हैं। इनकी अपेक्षा पूर्व दिशा में संख्यात गुणा हैं। पूर्वदिशा में पूर्व महाविदेह क्षेत्र बड़ा हैं। उसमें मनुष्य अधिक हैं, मनुष्य के वास अधिक हैं, बादर तेउकाय अधिक है और वहां से बहुत जीव सिद्ध होते हैं इसलिये पूर्व दिशा में संख्यात गुणा कहा है। इनकी अपेक्षा पश्चिम दिशा में विशेषाधिक है। पश्चिम दिशा में पश्चिम महाविदेह क्षेत्र है जिसमें सलिलावती एवं वप्रा विजय है जो एक हजार योजन गहरी (ऊंडी) तिर्छी है। वहां मनुष्य बहुत हैं, मनुष्य के वास बहुत हैं, बादर तेउकाय अधिक है और वहां से बहुत जीव सिद्ध होते हैं।